4

ग्रन्थालयों के प्रकार

परिचय

पिछले पाठ में आपने ग्रन्थालय के पाँच सूत्रों के बारे में पढ़ा है जो ग्रंथालय विज्ञान की रीढ़ की हड्डी हैं। सभी विषयों के संसाधनों में भारी मात्रा में वृद्धि तथा उपयोगकर्ताओं द्वारा विभिन्न प्रकार की सेवाओं की माँग में वृद्धि के परिणामस्वरूप विभिन्न प्रकार के ग्रंथालयों की उत्पत्ति हुई है। इस पाठ में हम आपको विभिन्न ग्रंथालयों द्वारा विभिन्न उपयोगकर्ताओं की सूचनाओं की आवश्यकताओं की पूर्ति से परिचित करायेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पूरा करने के पश्चात् आप सक्षम होगें ;

- शैक्षणिक, सार्वजनिक, विशिष्ट और राष्ट्रीय ग्रंथालयों के अर्थ की व्याख्या करने;
- प्रत्येक प्रकार के ग्रंथालय के कार्यो को परिभाषित करने और;
- इन सभी प्रकार के ग्रंथालयों द्वारा दी जाने वाली सेवाओं की परिगणना करने में।

4.1 शैक्षणिक ग्रंथालय

किसी भी शैक्षणिक संस्थान में ग्रंथालय की भूमिका को, संस्थान के शिक्षा दर्शन के संदर्भ में अनुभव किया जा सकता है। यह संसार के अधिकांश शैक्षणिक संस्थानों के ग्रंथालयों का भी सच है। शिक्षा सीखने की प्रक्रिया है जिसका लक्ष्य है लोगों के बीच क्षमताओं को विकसित करना। सामान्य रूप से शैक्षणिक ग्रंथालय, जिसमें विद्यालय, महाविद्यालय और विश्व विद्यालय के ग्रंथालय शामिल हैं, चार प्रकार के उपयोगकर्ताओं को उनके शिक्षा स्तर के आधार पर सेवाएँ प्रदान करते हैं। ये हैं:

(क) विद्यार्थी

टिप्पणी

(ख) शिक्षक

(ग) शोधार्थी

(घ) संस्था के प्रशासनिक, व्यावसायिक और अन्य कर्मचारी

ग्रंथालयों के प्रकारों के अनुसार उनके उद्देश्य, कार्य, वित्त स्रोत, योग्यता, पद और कर्मचारियों की संख्या भिन्न-भिन्न होती है। ग्रंथालय संग्रह के निर्माण में सामान्य ग्रंथ, पत्रिकाएँ, संदर्भ पुस्तकें और अन्य मीडिया सामग्री शामिल है जो अध्ययन और शोध का अंग होती है। इनमें दी जाने वाली सेवाएँ जैसे पढ़ने की सुविधाएँ, उधार देने और संदर्भ सेवाएँ आदि भी इन ग्रंथालयों में भिन्न होती हैं।

शैक्षणिक ग्रंथालय के उद्देश्य निम्न है:

- शैक्षणिक समुदाय की आवश्यकताओं की पूर्ति करना;
- समस्त प्रकार की अध्ययन व संदर्भ सामग्री का विकास करना;
- उपयोगकर्त्ताओं को अध्ययन कक्ष उपलब्ध कराना;
- छात्रों, शिक्षकों और शोध छात्रों हेतु समुचित ग्रंथ आगम-निर्गम सेवा उपलब्ध कराना: और
- प्रभावी संदर्भ और सूचना सेवाएँ उपलब्ध कराना।

शैक्षणिक ग्रंथालयों को तीन समूहों में विभाजित किया जा सकता है, ये है:

- विद्यालय ग्रंथालय
- महाविद्यालय ग्रंथालय
- विश्वविद्यालय ग्रंथालय

4.1.1 विद्यालय ग्रंथालय

भारत में विद्यालयों को शिक्षा के स्तर के आधार पर चार श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है। ये है: प्राथमिक (2) मिडिल (3) माध्यमिक (4) वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय।

विद्यालय ग्रंथालयों के उद्देश्य

सभी प्रकार के विद्यालय ग्रंथालयों के निम्न उद्देश्य होते है:

- पुस्तकें पढ़ने में अभिरुचि जागृत करना;
- पुस्तकों से प्रेम को बढ़ाना;
- पढ़ने की आदतों को प्रोत्साहित करना; और
- संप्रेषण कौशल को विकसित करना।

विद्यालय ग्रंथालयों के कार्य

छात्रों को ग्रंथालय में आकर्षित करने के लिए, उनकी रुचि और जिज्ञासा को विकसित करने के लिए विद्यालय ग्रंथालय को निम्नलिखित कार्य करने चाहिए;

टिप्पणी

- छात्रों एंव शिक्षकों के ज्ञानार्जन एवं शिक्षण हेतु सीखने-सिखाने की सामग्री संगृहीत करना;
- पुस्तकों का वर्गीकृत व्यवस्था में प्रर्दशन;
- भौतिक सुविधाएँ जैसे भवन, फर्नीचर और प्रकार्यात्मक अर्थात् कार्यासाधक उपरकण उपलब्ध कराना;
- पर्याप्त मात्रा में वित्तीय संसाधन उपलब्ध कराना; और
- योग्य एवं प्रतिबद्ध कर्मचारियों को नियुक्त करना।
- उपर्युक्त कार्य प्राथमिक, माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में लगभग समान रूप से लागू होते हैं। विद्यालय ग्रंथालयों में दी जाने वाली सेवाएँ हैं–
- पुस्तकों के लेन-देन की सुविधा
- अध्ययन सुविधा
- संदर्भ सेवा और
- छात्रों में पुस्तक व अन्य प्रकार की पाठ्य-सामग्रियों को पढ़ने की अभिरुचि विकसित करने के लिए उनको मार्गदर्शन व परामर्श प्रदान करना।

पाठगत प्रश्न 4.1

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :

1. विद्यालय ग्रंथालय का एक कार्य है पुस्तकों का.....व्यवस्था में ....।
2. शैक्षणिक ग्रंथालयों को तीन समूहों में विभाजित किया जा सकता है विद्यालय, महाविद्यालय और..... ग्रंथालय।
3. विद्यालय ग्रंथालय.....एवं.....को प्रोत्साहित करता है।

4.1.2 महाविद्यालय ग्रंथालय

महाविद्यालयी शिक्षा में युवा विद्यार्थियों के मस्तिष्क को नई चुनौतियों के लिए प्रशस्त करने में ग्रंथालय बहुत सहायक होता है। विद्यालयी शिक्षा की तुलना में महाविद्यालय की शिक्षा पूर्णत: भिन्न होती है। महाविद्यालय की कक्षाओं में छात्रों की संख्या अधिक होती है और प्रत्येक छात्र पर शिक्षकों का ध्यान देना संभव नहीं हो पाता। अत: छात्रों को स्वाध्याय और स्व-शिक्षा की आदत विकसित करने के लिए महाविद्यालय के ग्रंथालय पर निर्भर रहना पड़ता है।

महाविद्यालय ग्रंथालयों को चार श्रेणियों में बाँटा जा सकता है। जैसे:

1. कनिष्ठ महाविद्यालय
2. डिग्री महाविद्यालय

3. स्नातकोत्तर महाविद्यालय और
4. व्यावसायिक महाविद्यालय

टिप्पणी

महाविद्यालय ग्रंथालय के उद्देश्य

महाविद्यालय ग्रंथालय के प्रमुख उद्देश्य हैं:

- नए छात्रों में विभिन्न विषयों की गहन समझ विकसित करना;
- उच्च-शिक्षा और स्व-अध्ययन के लिए छात्रों का मार्गदर्शन करना;
- विद्यालयों, सरकारी विभागों, नागरिक संस्थाओं, व्यावसायिक प्रतिष्ठानों, व्यवसायों तथा उद्योगों का उच्चतर कार्यभार सँभालने के लिए छात्रों को तैयार करना;
- अधिक प्रबुद्ध, अधिक ज्ञानवान तथा उत्तरदायी नागरिक बनाने में प्रशिक्षित करना; और
- छात्रों को विभिन्न व्यवसायों जैसे विधि, आयुर्विज्ञान अभियांत्रिकी तथा प्रौद्योगिकी इत्यादि में प्रशिक्षित करना।

महाविद्यालय ग्रंथालय के कार्य

महाविद्यालय ग्रंथालय के बुनियादी कार्य हैं

- शिक्षकों और छात्रों को पढ़ने, अध्ययन करने और अनुसंधान की आवश्यकताओं की पूर्ति करने हेतु अपने मूल निकाय की सहायता करना;
- भौतिक सुविधाएँ, जैसे भवन, फर्नीचर उपकरण आदि की सुविधाएँ उपलब्ध कराना;
- पाठ्यक्रम आधारित पाठ्य पुस्तकों एवं अनुमोदित पुस्तकों के नवीनतम संस्करण की एकाधिक प्रतियाँ उपलब्ध कराना;
- ग्रंथालय में संदर्भ पुस्तकों की व्यापक व्यवस्था करना;
- विभिन्न विषयों की नवीनतम पुस्तकों और पत्रिकाओं के नए एव पुराने अंको का संग्रह उपलब्ध कराना;
- विविध मीडिया सामग्री और कंप्यूटर आधारित शिक्षण व अध्ययन सामग्रियों को उपलब्ध कराना;
- मनोरंजन के उद्देश्य से महत्वपूर्ण समाचारपत्रों और अन्य लोकप्रिय सामग्री जैसे लोकप्रिय गल्प साहित्य (फिक्शन) जीवनियाँ, यात्रा वृत्तान्त, कला की पुस्तकें आदि उपलब्ध कराना; और
- छात्रों की सहायता के लिए पिछले वर्षों के प्रश्नपत्रों को रखना;

महाविद्यालय ग्रंथालय की सेवाएँ

महाविद्यालय ग्रंथालय के कर्मचारियों द्वारा निम्नलिखित सेवाएँ प्रदान की जाती हैं:

टिप्पणी

- अध्ययन-सामग्री पुस्तकों का आदान-प्रदान तथा पाठ्य पुस्तकें उपलब्ध करना;
- छात्रों को मैनुवल या कंप्यूटरकृत पुस्तक सूची के उपयोग करने के लिए मार्गदर्शन;
- अलमारियों में रखी हुई पुस्तकों तथा संदर्भग्रंथो को ढूँढ़ने में मदद करना;
- छात्रों को ग्रंथालय संसाधनों का प्रभावपूर्ण और कुशलता पूर्वक उपयोग करने का निर्देश और प्रशिक्षण प्रदान करना;
- ग्रंथालय के सभी सदस्यों को सूचना, संदर्भ और निर्देशित सेवाएँ प्रदान करना;
- नवीनतम पुस्तकों को प्रदर्शित करना व विविध मीडिया सामग्री तैयार करना;
- पर्याप्त मात्रा में विविध मीडिया सामग्री और उनके उपकरण प्राप्त कराना, उन्हें उपयोग के योग्य बनाना; और
- रिप्रोग्राफी सेवा

ग्रंथालय समिति

हर महाविद्यालय के ग्रंथालय में एक ग्रंथालय समिति होती है। प्रधानाचार्य उस समिति के अध्यक्ष व ग्रंथालयाध्यक्ष उस समिति का सदस्य सचिव होता है। इस समिति में महाविद्यालय के कुछ वरिष्ठ अध्यापक व महाविद्यालय के बाहर से भी कुछ ग्रंथालय विज्ञान विशेषज्ञ होते हैं। ग्रंथालयाध्यक्ष ही दैनिक प्रबंधन के लिए उत्तरदायी अधिकारी होता है जबकि ग्रंथालय के विकास की नीति के संबंध में निर्णय ग्रंथालय समिति द्वारा लिए जाते है। महाविद्यालय ग्रंथालय के वित्त के प्रमुख स्रोत हैं यू.जी.सी. से प्राप्त अनुदान, राज्य सरकार द्वारा अनुदान, फीस और छात्रों से प्राप्त जुर्माना।

पाठगत प्रश्न 4.2

सत्य या असत्य बताएँ :

(1) ग्रंथालयाध्यक्ष महाविद्यालय की ग्रंथालय-समिति का अध्यक्ष होता है।

(2) ग्रंथालयाध्यक्ष महाविद्यालय ग्रंथालय के विकास के संबंध में नीति संबंधी निर्णय लेता है।

(3) महाविद्यालय ग्रंथालय का कार्य विविध मीडिया-सामग्री व कम्प्यूटर उपलब्ध कराना नहीं है।

4.1.3 विश्वविद्यालय ग्रंथालय

1947 के बाद विश्वविद्यालयों की संख्या तेज़ी से बढ़ी है। उनकी बढ़ोतरी का प्रमाण यही है कि विश्वविद्यालयों में छात्रसंख्या, नामाकंन, शोध करने वाले छात्र, विभिन्न विषयों के कोर्स, नए विभाग, शोध परियोजना (रिसर्च प्रोजेक्ट्स) और संकाय सदस्यों की संख्या में काफी बढ़ोतरी हुई है यहाँ अनेक प्रकार के विश्वविद्यालय हैं जैसे- परंपरागत वि.वि, व्यावसायिक वि.वि. डीम्ड यूनिवर्सिटी, ओपन यूनिवर्सिटी आदि।

टिप्पणी

विश्वविद्यालय ग्रंथालय की स्थापना, प्रशासन व रखरखाव विश्वविद्यालय के पाँच प्रमुख कार्यों– अध्ययन एवं अध्यापन, शोध एवं नई जानकारी प्राप्त करना, शोध परिणामों का प्रकाशन एवं प्रसार, ज्ञान एवं विचारों का संरक्षण तथा कार्यक्रमों का विस्तार– में सहायता हेतु किया जाता है। विश्वविद्यालय ग्रंथालयों को विभिन्न छात्र वर्गों, शोध एवं पोस्ट, डॉक्टोरल शोधकर्ताओं, विश्वविद्यालय प्रबंधन, प्रशासन तथा पेशेवर स्टाफ के विभिन्न शैक्षणिक एवं कार्यकारी निकायों की माँगों को पूरा करने की चुनौतीपूर्ण एवं कठिन भूमिका निभानी है।

विश्वविद्यालय ग्रंथालय के उद्देश्य

विश्वविद्यालय ग्रंथालय विश्वविद्यालय को अपने लक्ष्यों और उद्देश्यों को पूरा करने में अपना समर्थन और सहायता देकर बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विश्वविद्यालय की बहुआयामी गतिविधियों के निष्पादन में उन्हें मदद करनी होती हैं। विश्वविद्यालय ग्रंथालय के निम्न उद्देश्य हैं:-

- सरकार, उद्योग, स्वास्थ्य, अभियांत्रिकी, विधि, चिकित्सा, रक्षा, शिक्षा, कृषि आदि विभिन्न क्षेत्रों को बौद्धिक तथा प्रबंधकीय नेतृत्व प्रदान करना तथा उनमें सामाजिक सोद्देश्यता का भाव भरना;
- उपर्युक्त विविध क्षेत्रों में शोधार्थियों का मार्गदर्शन करना ताकि शोध की उपलब्धियों का उपयोग लोगों के जीवन-स्तर को सुधारने में किया जा सके, और भावी पीढ़ी के लिए ज्ञान और विचार का संरक्षण किया जा सके।

विश्वविद्यालय ग्रंथालय के कार्य

विश्वविद्यालय ग्रंथालय के प्रमुख कार्य हैं:

- ज्ञान-प्राप्ति, शिक्षण, शोध तथा प्रकाशन इत्यादि के लिए विविध विषयों से संबंधित मुद्रित एवं मीडिया संग्रह का विकास करना;
- ग्रंथालय में संग्रहीत अर्जित ज्ञान सामग्री को पाठकों के उपयोग के लिए व्यवस्थित करना और उसका भण्डारण करना;
- उपयोगकर्ताओं को विभिन्न प्रकार की माँग आधारित तथा पूर्वानुमानित ग्रंथालय, प्रलेखन तथा सूचना सेवाएँ प्रदान करना; और
- छात्रों, अनुसंधानकर्ताओं और शिक्षकों की मनोरंजन, स्वाध्याय, वैयक्तिक विकास संबंधी जिज्ञासा और ज्ञान पिपासा को शांत करना।

विश्वविद्यालय ग्रंथालय द्वारा प्रदत्त सेवाएँ

विश्वविद्यालय ग्रंथालय में प्रदान की जाने वाली सेवाओं की प्रकृति और दक्षता प्रत्येक ग्रंथालय में अलग-अलग तरह की होती है। सूचना और प्रौद्योगिकी के आने पर अधिकांश

टिप्पणी

विश्वविद्यालयों के ग्रंथालयों ने अपने क्रियाकलापों को स्वचालित करने के लिए ग्रंथालय प्रबंधन सॉफ्टवेयर का उपयोग किया है, और उनके द्वारा विभिन्न प्रकार की सेवाएँ प्रदान की हैं, जो पहले नहीं दी जाती थीं। विश्वविद्यालय ग्रंथालय में दी जाने वाली सेवाओं का उल्लेख नीचे किया गया है:

- अध्ययन और पुस्तकों के लेन-देन की सेवाएँ;
- ग्रंथपरक अनुदेश और ग्रंथालय से परिचित करवाना;
- ग्रंथालय सूचीकरण व प्रलेखों की उपलब्धि का पता लगाने में सहायता देना;
- संदर्भ और सूचना सेवाएँ;
- सी.ए.एस. सामयिक जागरूकता सेवा;
- एस.डी.आई. चयनित सूचना प्रसारण;
- बिब्लियोग्राफिक सेवाएँ;
- अंतर-ग्रंथालय ऋण सेवाएँ (आई एल एल):
- रिप्रोग्राफिक सेवाएँ;
- समाचार पत्र, कतरन सेवाओं का अनुरक्षण (रख-रखाव);
- पुस्तिकाओं, विवरणिकाओं, रिर्पोटों और पिछले वर्षों की परीक्षाओं को प्रश्न-पत्रों का खड़ी फाईलों में रखरखाव करना;
- प्रलेखों का आरक्षण;
- उपयोगकर्ता उपभोक्ता-शिक्षा
- प्रदर्शनियाँ तथा विशेष प्रदर्शन;
- विशेष व्याख्यान तथा नए सॉफ्टवेयर द्वारा दी जाने वाली सेवाओं का प्रदर्शन; और
- पाठकोन्मुखी संगोष्ठियाँ और कार्यशालाएँ।

विश्वविद्यालय ग्रंथालय समिति

विश्वविद्यालय का ग्रंथालय मुख्य ग्रंथालयाध्यक्ष के अधीन होता है। यह विश्वविद्यालय के सांविधिक नियमों के अनुसार प्रशासित होता है। ग्रंथालय की संवीक्षा तथा मूल्यांकन, विश्वविद्यालय की शैक्षणिक तथा कार्यकारी परिषद् के अधीन होती है एक ग्रंथालय सलाहकार समिति होती है और उसका अध्यक्ष विश्व विद्यालय का उपकुलपति या उसके द्वारा नामित व्यक्ति होता है तथा ग्रंथालयाध्यक्ष इस समिति का सदस्य सचिव एवं संयोजक होता है। इस समिति में सदस्य के रूप में विश्वविद्यालय के विभागों के कुछ वरिष्ठ शिक्षक ग्रंथालय विज्ञान के कुछ विशेषज्ञ तथा कुछ विद्धान होते हैं। विश्वविद्यालय ग्रंथालय प्रणाली से संबंधित शैक्षिक तथा प्रशासनिक मामलों के लिए निर्देशक सिद्धान्त तथा नीतियाँ बनाना इस समिति का दायित्व होता है। ग्रंथालयसमिति ग्रंथालय द्वारा बनाए गए ग्रंथालय के

टिप्पणी

बजट का अनुमोदन करके उसे वित्त समिति को भेजती है। वित्त का मुख्य स्रोत है विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का अनुदान, राज्य सरकारों का अनुदान, पाठकों से प्राप्त किए गए शुल्क एवं जुर्माना आदि। यह समिति बड़ी संख्या में संग्रह खरीदने, पुरानी पत्रिकाओं के अंकों को खरीदने, ई-पत्रिकाओं, फर्नीचर, उपकरणों और कंप्यूटर हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर को खरीदने की सलाह प्रदान करती है और मुख्य उपहार संग्रहों को प्राप्त करने के लिए स्वीकृति भी प्रदान करती है।

पाठगत प्रश्न 4.3

सही विकल्प चुनें :

1. ग्रंथालय सलाहकार समिति का अध्यक्ष होता है

   (क) मुख्य ग्रंथालयाध्यक्ष

   (ख) उप कुलपति

   (ग) प्रशासनिक अधिकारी

2. निम्नलिखित में से कौन-सी सेवाएँ विश्वविद्यालय ग्रंथालय द्वारा प्रदान नहीं की जाती हैं।

   (क) विशेष व्याख्यान, नए सॉफ्टवेयर द्वारा दी जाने वाली सेवाओं का प्रदर्शन

   (ख) पाठकोन्मुख गोष्ठी व कार्यशालाएँ

   (ग) पढ़ने, आदान-प्रदान करने और पाठ्य पुस्तकों संबंधी सेवाएँ।

4.2 विशिष्ट ग्रंथालय

विशिष्ट ग्रंथालय 20वीं शताब्दी में अस्तित्व में आए। विशिष्ट ग्रंथालय विशेष पाठक वर्ग को सेवाएँ प्रदान करते हैं। उनमें विशिष्ट विषयों का संग्रह होता है और वे विशिष्ट सेवाएँ प्रदान करते हैं। इन ग्रंथालयों की स्थापना उन संगठनों की सूचनाओं की आवश्यकताओं को पूरा करना है जिस संगठन के साथ ये संलग्न होते हैं। आमतौर पर ये अनुसंधान और विकास (आर एण्ड डी) की गतिविधियों के लिए होते हैं और सभी प्रकार के प्रलेखों यथा हैण्डबुक, तकनीकी प्रतिवेदन, अद्यतन प्रतिवेदनों, ग्रंथसूचियों, नवीन सूचना बुलेटिनों, सेवाओं, पत्रिकाओं अनुक्रमणिका, सारांश, निर्देशिकाओं, प्रलेखन सूचियों और अधिग्रहण सूचियों का संग्रह करते है।

विशिष्ट ग्रंथालय की परिभाषा

'हेरॉड्स लाइब्रेरियंस ग्लॉजरी ऑफ टर्मस' में परिभाषित करते हुए लिखा है: विशिष्ट ग्रंथालय संगठनों, शोध संस्थानों, औद्योगिक तथा वाणिज्य प्रतिष्ठानों एवं सरकारी विभागों

टिप्पणी

और यहाँ तक कि शिक्षा संस्थानों द्वारा किसी सीमित विषय क्षेत्र में प्रणीत पुस्तकों तथा अन्य मुद्रित, चित्रात्मक तथा अभिलेखित सामग्रियों का संग्रह स्थल हैं। कई सार्वजनिक ग्रंथालय भी, किसी विशेष व्यवसाय के लोगों को सूचना उपलब्ध कराने के लिए 'तकनीकी ग्रंथालय' या विशिष्ट विषय ग्रंथालय के रूप में अपनी विशिष्ट शाखा चला सकते है यथा संगीत ग्रंथालय।

विशिष्ट ग्रंथालय के उद्देश्य

एक विशिष्ट ग्रंथालय अपने पैतृक संस्थान का अभिन्न अंग है और यह पूरी तरह से उनके कार्यक्रमों एवं गतिविधियों में सहयोग देता है। विशिष्ट ग्रंथालय के मुख्य उद्देश्य हैं अपने पैतृक संगठन की परियोजनाओं और कार्यक्रमों के आधार पर प्रमुख विषयों के पुर्वानुमानित एवं वर्तमान संग्रह को विकसित करना। इनका ध्येय है उपयोगकर्ताओं को उनके क्षेत्रों में महत्वपूर्ण विकास की नवीनतम सूचनाओं को आवश्यकता पड़ने पर तुरंत उपलब्ध कराना। ये हर प्रकार की शैक्षिक, तकनीकी और ये विशेषज्ञों को उपयुक्त सेवाएँ उपलब्ध कराने के लिए हर प्रकार की शैक्षिक, तकनीकी और प्रलेखात्मक सहायता प्रदान करते हैं।

विशिष्ट ग्रंथालय के कार्य और सेवाएँ

विशिष्ट ग्रंथालय विभिन्न प्रकार के निम्नलिखित कार्य व सेवाएँ प्रदान करते है:

- व्यापक सूची बनाने के लिए समग्र साहित्य की खोज;
- उपयोगकर्ताओं द्वारा माँगी गई अद्यतन सूचना को चुनना, व्यवस्थिन करना, भण्डारण करना और पुन: प्राप्त करना;
- उपलब्ध सूचनाओं का विश्लेषण, संश्लेषण तथा मूल्यांकन करना;
- अद्यतन सूचना प्रतिवेदन, समालोचनात्मक समीक्षाएँ, मोनोग्राफ, अनुसंधान प्रतिवेदन, रिप्रिंट्स प्रदान करना;
- अनुक्रमणिकाएँ, सारांश और उद्धरण उपलब्ध कराना;
- अधिगृहीत पुस्तकों की सूची, बुलेटिन, न्यूज लैटर, सारांश, हैण्डबुक या मैनुअल, ग्रंथसूची तैयार करना;
- प्रलेखों का निर्गम, अन्तर ग्रंथालय में लेन-देन;
- संदर्भ और संदर्भ निर्देशन सेवाएँ प्रदान करना;
- सामयिक जागरूकता सेवा, चयनित सूचना प्रसारण और अनुवाद सेवाएँ उपलब्ध कराना।

विशिष्ट ग्रंथालय के प्रकार

विशिष्ट ग्रंथालय कई प्रकार के होते हैं।

- सरकारी ग्रंथालय

टिप्पणी

संसद ग्रंथालय, नई दिल्ली
केंद्रीय सचिवालय ग्रंथालय, नई दिल्ली

- समितियों और संस्थाओं के ग्रंथालय
  यू.पी. हिस्टोरीकल सोसायटी, लखनऊ
  वर्ल्ड पोइट्री सोसाइटी इंटरकौंटीनेंटल, चेन्नई
- औद्योगिक और वाणिज्यिक संगठन
  लार्सन एण्ड टूबरो ग्रंथालय मुंबई
  भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड ग्रंथालय; नई दिल्ली
- अनुसंधान संगठन–
  भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली
  भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली।
- शैक्षणिक संस्थान–
  भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली, चेन्नई, कानपुर आदि।
  स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर, नई दिल्ली
  लाल बहादुर शास्त्री प्रबंधन इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली।
- सार्वजनिक ग्रंथालय–
  न्यूयॉर्क पब्लिक लाइब्रेरी, न्यूयॉर्क–साइंस डिविजन
  जोहन क्रेशर पब्लिक लाइब्रेरी–शिकागो–साइंस टेक्नोलॉजी एंड मेडीसन कलेक्शन

पाठगत प्रश्न 4.4

निम्नलिखित का मिलान करें :

(क) शैक्षणिक ग्रंथालय	(i) भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद
(ख) सरकारी ग्रंथालय	(ii) न्यूयॉर्क पब्लिक लाइब्रेरी
(ग) अनुसंधान संगठन	(iii) भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली
(घ) सार्वजनिक ग्रंथालय	(iv) संसद ग्रंथालय
	(v) स्कूल ऑफ प्लानिंग एण्ड आर्किटेक्चर, नई दिल्ली।

4.3 सार्वजनिक ग्रंथालय

सार्वजनिक ग्रंथालय एक सामाजिक संस्था है। यह समाज के कल्याण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सार्वजनिक ग्रंथालय के विकास के लिए कई कारक ज़िम्मेदार हैं। ये हैं:

टिप्पणी

- जनता की ज्ञान पिपासा;
- स्व-शिक्षा के माध्यम से साक्षरता के स्तर में सुधार;
- सार्वभौम लोकशिक्षा के अवसर;
- प्रबुद्ध नेतृत्व और लोक कल्याण;
- विज्ञान व प्रौद्योगिकी में तीव्र प्रगति; और
- खाली समय का सदुपयोग।

कंप्यूटर और संचार प्रौद्योगिकी क्षेत्र में विकास होने से सार्वजनिक ग्रंथालयों द्वारा जनसंचार, इंटरनेट, सेल फोन आदि से भोगौलिक, राजनीतिक, आदि व्यवधानों को पार करके त्वरित जानकारी प्रदान करना संभव हो गया है और ये मुख्यत: सार्वजनिक निधि द्वारा संचालित होते हैं।

सार्वजनिक ग्रंथालय की परिभाषा

सार्वजनिक ग्रंथालय गैर लाभ के ग्रंथालय हैं, जिनकी स्थापना आम जनता के उपयोग के लिए होती है अत: सार्वजनिक ग्रंथालय जनता के होते है जो जनता द्वारा जनता के लिए संचालित होते हैं। ये प्रत्येक नागरिक को बिना किसी भेदभाव के जन्म, जाति, रंग, लिंग, सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक स्तर के, नि:शुल्क सेवाएँ प्रदान करते हैं। आमतौर पर सभी प्रकार के ग्रथालयों के पाँच उद्देश्य होते है, शिक्षा, सूचना, मनोरंजन, सौंदर्य सम्मान और अनुसंधान। उदाहरण के लिए शैक्षिक ग्रंथालयों का मुख्य उपयोग शिक्षा व अनुसंधान के लिए होता है। विशिष्ट ग्रंथालयों का सूचना और अनुसंधान के लिए, लेकिन सार्वजनिक ग्रंथालयों के द्वारा पाँचों उद्देश्यों की पूर्ति होती है।

यूनेस्को का पब्लिक लाइब्रेरी घोषणापत्र

यूनेस्को ने अपने सदस्य देशों के लिए सार्वजनिक ग्रंथालय मैनिफेस्टो को 1949 में तैयार किया और 1972 में इसमें संशोधन किया। बाद में 1994 मे इन्टरनेशनल फेडरेशन ऑफ लाइब्रेरी एसोसिएशंस एंड इंस्टीट्यूशंस (IFLA) के सहयोग से सार्वजनिक ग्रंथालय घोषणापत्र तैयार किया गया। इस घोषणापत्र को व्यापक रूप में सभी देशों द्वारा स्वीकार किया गया है। यह सार्वजनिक ग्रंथालय के उद्देश्यों, गतिविधियों और सेवाओं उसकी निधि, अधिनियम और नेटवर्क, उसके परिचालन और प्रबंधन एवं घोषणापत्र को लागू करने के लिए निर्देश प्रदान करता है। ये सार्वजनिक ग्रंथालय के विशिष्ट उद्देश्यों को भी निर्दिष्ट करता है। ये निम्नलिखित हैं:

सार्वजनिक ग्रंथालय के उद्देश्य

सूचना, साक्षरता, शिक्षा तथा संस्कृति से संबंधित निम्नलिखित प्रमुख लक्ष्यों की अपनी सेवाओं के माध्यम से पूर्ति करना सार्वजनिक ग्रंथालयों का प्रमुख उद्देश्य है:

(1) बाल्यावस्था से ही बच्चों में पठन क्षमता तथा पठन रुचि का निर्माण व विकास करना;

टिप्पणी

(2) व्यक्तिगत स्व-शिक्षा के साथ-साथ औपचारिक शिक्षा को भी समर्थन देना;

(3) निजी सर्जनात्मक विकास के अवसर उपलब्ध करना;

(4) बाल तथा युवा वर्ग में कल्पनाशक्ति तथा नव सृजन प्रतिभा को प्रोत्साहित करना;

(5) सांस्कृतिक परंपराओं, कला-प्रेम, वैज्ञानिक उपलब्धियों तथा नव सृजन के प्रति जागरूकता को बढ़ावा देना;

(6) समस्त प्रदर्शनकलाओं की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति तक पहुँच प्रदान करना.

(7) अंतर-सांस्कृतिक संवाद को प्रोत्साहन देना तथा सांस्कृतिक विविधता का समर्थन करना;

(8) नैतिक परंपराओं का समर्थन करना;

(9) नागरिकों को सभी प्रकार की सामुदायिक सूचनाएँ उपलब्ध कराना;

(10) स्थानीय उद्यमों, संघों तथा समहित वर्गों को पर्याप्त सूचना सेवा उपलब्ध कराना;

(11) सूचना तथा कम्प्यूटर का उपयोग करने में लोगों को सक्षम बनाना;

(12) सभी आयु वर्गो के व्यक्तियों के लिए साक्षरता से संबंधित गतिविधियों एवं योजनाओं में भाग लेना तथा यदि आवश्यक हो तो ऐसी गतिविधियाँ स्वयं चलाना।

(स्रोत : http://archive.ifla.org/vii/s8/unasco/eng.htm/)

संक्षेप में, यूनेस्को सार्वजनिक ग्रंथालय घोषणापत्र में सार्वजनिक ग्रंथालय से यह आशा की जाती है कि वे सूचना शिक्षा तथा संस्कृति जैसे तीन प्रमुख क्षेत्रों में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँगे। इन्हें निम्न रूप में सेवा प्रदान करनी है:

- सूचना केन्द्र
- स्व शिक्षा केन्द्र
- सांस्कृतिक केन्द्र
- स्थानीय सांस्कृतिक सामग्री केन्द्र
- प्रजातान्त्रिक भावना की समझ को विकसित करना;
- निष्पक्ष सेवा एजेन्सी के रूप में कार्य करना?

सार्वजनिक ग्रंथालय के उद्देश्य एवं कार्य

डॉ.एस.आर. रंगनाथन के अनुसार सार्वजनिक ग्रंथालय के निम्नलिखित उद्देश्य और कार्य निर्धारित किये गये है:

(i) समाज के प्रत्येक व्यक्ति को जीवन पर्यंत स्व-शिक्षा प्राप्त करने में सहायता करना;

(ii) प्रत्येक व्यक्ति को सभी विषयों पर अद्यतन सूचना एवं तथ्य उपलब्ध कराना;

(iii) बिना किसी पूर्वग्रह के संतुलित ढंग से सभी को अभिलेखित सूचनाएँ वितरित

टिप्पणी

कराना और स्थानीय, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में उनके दायित्वों एंव कर्त्तव्यों को पूरा करने में सहायक सिद्ध होना;

(iv) अनुसंधानकर्त्ताओं को कम से कम समय में नवीनतम जानकारी उपलब्ध कराना;

(v) देश की सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण करना;

(vi) जनसाधारण को अवकाश के समय का सदुपयाग करने की सुविधा प्रदान कराना;

(vii) सभी सामग्रियों के प्रभारी होने के नाते नागरिकों के सामाजिक कल्याण के लिए सतत् रूप से कार्य करना।

सार्वजनिक ग्रंथालय के कार्य संक्षेप में नीचे उल्लिखित है। अधिकांश देशों में, सार्वजनिक ग्रंथालय प्रणाली के लिए कानून बने हैं और वे सभी उन कानूनों को ध्यान में रखकर अपने राज्यों, ज़िलों और गाँवों में सभी लोगों तक ग्रंथालयों को पहुँचाने के लिए अपना संगठनात्मक ढाँचा एंव भौगोलिक वितरण प्रणाली स्थापित करते है। उपयोगकर्ताओं को ग्रंथालय की ओर आकर्षित करने के लिए व उनकी पठन अभिरुचि को बनाए रखने के लिए ग्रंथालय, सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन करते हैं, जैसे व्याख्यान, गोष्ठियाँ, फिल्म शो, संगीत समारोह, नाटक, कला प्रदर्शनियाँ और बच्चों के लिए कहानी सत्र। ये मात्र पुस्तकों के भंडार के रूप में ही नहीं बल्कि सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में भी कार्य करते है। इस प्रकार सार्वजनिक ग्रंथालय सूचना-समृद्ध तथा कुशल नागरिकों को तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

गतिविधि: 4.1 : आप अपने निकट के किसी एक सार्वजनिक विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय अथवा विशिष्ट ग्रंथालय में जाएँ ताकि इन ग्रंथालयों के बारे में प्राथमिक सूचना और जानकारी प्राप्त कर सकें।

पाठगत प्रश्न 4.5

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :

1. यूनेस्को पब्लिक लाइब्रेरी घोषणा पत्र में सार्वजनिक ग्रंथालय से आशा की जाती है कि वे सूचना, शिक्षा और ..... जैसे तीनों प्रमुख क्षेत्रों में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँगे।
2. सार्वजनिक ग्रंथालय के उद्देश्य और कार्यो में से एक है, प्रत्येक व्यक्ति को .... प्राप्त करने में सहायता करना।

4.4 राष्ट्रीय ग्रंथालय

राष्ट्रीय ग्रंथालय किसी देश की सरकार द्वारा उस देश के सरकारी कोष से स्थापित होते हैं और उस देश से संबंधित प्रमुख सूचनाओं का भण्डारण करके उनकी सेवाएँ प्रदान करते हैं। सार्वजनिक ग्रंथालय से भिन्न, राष्ट्रीय ग्रंथालय शायद ही कभी नागरिकों को आदान-प्रदान सेवा देते हैं। प्राय: उनके संग्रह में दुलर्भ मूल्यवान तथा महत्वपूर्ण कृतियाँ होती हैं।

टिप्पणी

राष्ट्रीय ग्रंथालय की परिभाषा

'हैरॉड्स लाइब्रेरियंस ग्लौसरी ऑफ टर्म्स 1987' में राष्ट्रीय ग्रंथालय को इस प्रकार परिभाषित किया गया है; राष्ट्रीय ग्रंथालय सरकारी कोष से सस्थापित और प्रबंधित ग्रंथालय है जो सम्पूर्ण राष्ट्र को सेवा प्रदान करता है। इसमें रखी गई पुस्तकें सामान्यतय: केवल संदर्भ के लिए होती हैं। ये आमतौर पर विधिक जमा अधिनियमों (लीगल डिपोजिट सलेशन) के तहत सामग्री प्राप्त करते हैं। इसका अर्थ है अपने देश में प्रकाशित सभी पुस्तकों, पत्रिकाओं, सामयिकों, समाचारपत्रों और अन्य मुद्रित प्रलेखों और मल्टी मीडिया सामग्री को देश की सांस्कृतिक विरासत के रूप में सुरक्षित रखना और भावी-पीढ़ी तक पहुँचाना। देश के सभी प्रकाशक इस ग्रंथालय में अपनी पुस्तकों को विधिक रूप में जमा कराने के लिए बाध्य होते हैं और अन्य देशों में अपने देश से संबंधित प्रकाशित पुस्तकों को देश के लिए क्रय भी किया जाता है। वैधानिक निर्देशों का पालन कराने के लिए सामान्यत: दण्ड की धाराओं का भी प्रावधान होता है।

राष्ट्रीय ग्रंथालय के उद्देश्य और कार्य

राष्ट्रीय ग्रंथालय का मुख्य उद्देश्य है अपने देश के सभी नागरिकों द्वारा स्वदेश में अथवा विदेश में प्रकाशित या देश के संबंध में अन्य देशों में प्रकाशित सभी मुद्रित व गैर-मुद्रित प्रलेखों की पहचान, अधिग्रहण, व्यवस्थापन, संग्रह और पुन: प्राप्ति करना।

सन् 1964 में मनीला में आयोजित 'दि रीजनल सेमीनार ऑन दि डेवलपमैन्ट ऑफ नेशनल लाइब्रेरी' इन एशिया एण्ड पैसिफिक एरिया के अन्तिम प्रतिवेदन में राष्ट्रीय ग्रंथालय के निम्न कार्यो की संस्तुति की गई है:

- राष्ट्र के ग्रंथालयों को नेतृत्व प्रदान करना
- देश में जारी किए गए सभी प्रकाशनों के लिए स्थायी संग्रह के रूप में सुनिश्चित सेवा प्रदान करना;
- अन्य प्रकार की सामग्री का अधिग्रहण करना;
- ग्रंथपरक सूचना सेवाएँ प्रदान करना;
- सहकारी गतिविधियों के लिए एक समन्वय केन्द्र के रूप में कार्य करना, और
- सरकार को सेवा प्रदान करना;

राष्ट्रीय ग्रंथालयों के उदाहरण

सभी देशों के समग्र राष्ट्रीय ग्रंथालय हैं जो राष्ट्रीय ग्रंथालय की सभी गतिविधियों और कार्यों का निष्पादन करते है। यथा,

1. भारतीय राष्ट्रीय ग्रंथालय, भारत
   http://www.natiionallibrary.gov.in

टिप्पणी

2. लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस (एल.सी.) यू.एस.ए.
http://www.log.gov/index:html

3. ब्रिटिश लाइब्रेरी, यू.के.
http://www.bl.uk/

4. दि नेशनल लाइब्रेरी ऑफ कनाडा, कनाडा
http://www.ottawakoiask.com/nationallibrary.html

पिछले कुछ दशकों में राष्ट्रीय ग्रंथालयों की गतिविधियों में पर्याप्त विस्तार हुआ है। इसके परिणामस्वरूप विभिन्न देशों में कुछ राष्ट्रीय ग्रंथालयों में इन गतिविधियों और इन कार्यों को करने के लिए राष्ट्रीय ग्रंथालय निर्मित हुए हैं और इन ग्रन्थालयों को उनके (क) कार्यो (ख) विषयों (ग) सेवित विशेष समूहों (घ) संग्रहित सामग्री के प्रकार (ङ) किसी भोगोलिक क्षेत्र अथवा किसी सांस्कृतिक समूह और (च) कार्यात्मक साझेदारी करने वाले उपराष्ट्रीय आधार पर वर्गीकृत किया जाता है। यथा,

(क) कार्य पर आधारित (आदान-प्रदान) - ब्रिटिश लाइब्रेरी लैंडिंग डिवीजन, यू.के.

(ख) विषय पर आधारित (चिकित्सा विज्ञान) - नेशनल मेडिकल लाइब्रेरी, भारत
(कृषि विज्ञान) - नेशनल एग्रीकल्चर लाइब्रेरी, यू.एस.ए.

(ग) सेवित विशेष वर्ग (दृष्टि बाधित) - नेशनल लाइब्रेरी ऑफ दी ब्लाइंड, यू.के.
(विधायक) : नेशनल डायट लाइब्रेरी

(घ) उप-राष्ट्रीय/क्षेत्र आधारित -नेशनल लाइब्रेरी ऑफ वेल्स
(सांस्कृतिक) - नेशनल लाइब्रेरीज़ ऑफ यूएसएसआर, सर्बिया

(ङ) साझेदारी पर आधारित - शेयरिंग स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ आर्हुस, डेनमार्क

गतिविधि : भारत के राष्ट्रीय ग्रंथालय, कोलकता की वेबसाइट पर जाकर उसकी मुख्य गतिविधियों के बारे में लिखिए।

पाठगत प्रश्न 4.6

सत्य या असत्य बताएँ :

1. राष्ट्रीय ग्रंथालय और विशिष्ट ग्रंथालय में मुख्य अन्तर यही है कि राष्ट्रीय ग्रंथालय पूरे राष्ट्र में सभी प्रकाशित व अप्रकाशित प्रलेखों का संग्रह करता है।
2. लाइब्रेरी ऑफ कॉग्रेस यू.एस.ए. के राष्ट्रीय ग्रंथालय का उदाहरण नहीं है।

आपने क्या सीखा

- हमने प्रत्येक प्रकार के ग्रंथालयों जैसे शैक्षणिक, विशिष्ट सार्वजनिक और राष्ट्रीय की परिभाषा, उद्देश्य कार्यों, उपयोगकर्ताओं के वर्ग समूह और उनको दी जाने वाली सेवाओं

टिप्पणी

की चर्चा की। समग्रत:, ये ग्रंथालय विविध प्रकार के उपयोगकर्ताओं के सामान्य और विशिष्ट उद्देश्य को पूरा करते हैं।

- शैक्षणिक ग्रंथालय छात्रों, शिक्षकों और शोधार्थियों को सेवाएँ प्रदान करते हैं।
- विशिष्ट ग्रंथालय विशेष क्षेत्रों में कार्यरत विशेषज्ञों शोधकर्त्ताओं को सेवाएँ प्रदान करते हैं।
- सार्वजनिक ग्रंथालय जनसमूह के लिए हैं।
- राष्ट्रीय ग्रंथालय सभी भाषाओं में सभी प्रकार के संग्रहों का अधिग्रहण करके पूरे राष्ट्र को अपनी सेवाएँ प्रदान करते हैं। ग्रंथालय के विभिन्न प्रकारों के बीच में कोई बड़ा अन्तर नहीं है। जैसे, मैनेजमैंट, इंजीनियरिंग और मेडिकल कॉलेज के ग्रंथालय शैक्षणिक ग्रंथालय के साथ-साथ विशिष्ट ग्रंथालय भी हैं।

पाठांत प्रश्न

1. सार्वजनिक ग्रंथालय के महत्वपूर्ण कार्य लिखिए।
2. महाविद्यालय ग्रंथालय के कार्यों का वर्णन कीजिए।
3. विशिष्ट ग्रंथालय के कार्यों का उल्लेख कीजिए।
4. राष्ट्रीय ग्रंथालय के उद्देश्य एवं कार्यों का वर्णन कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

4.1

(1) प्रदर्शन, वर्गीकृत

(2) विश्वविद्यालय ग्रंथालय

(3) पढ़ने की आदत और संप्रेषण कौशल

4.2

(1) गलत

(2) सही

(3) गलत

4.3

1. (ख)

टिप्पणी

2. (ग)

4.4

(क) III

(ख) IV

(ग) I

(घ) II

4.5

1. संस्कृति

2. जीवनपर्यन्त स्व-शिक्षा

4.6

1. सही

2. गलत

शब्द

इस पाठ में प्रयुक्त शब्द जिनको और व्याख्या की आवश्यकता है वे नीचे दिये गए हैं। शिक्षार्थियों से अपेक्षा है कि वे इनकी व्याख्या करें।

जीवनी साहित्य :

जीवन वृत्तान्त :

अंतरग्रंथालय ऋण :

जनसंचार माध्यम :

संग्रह स्थान :

प्रतिलिपिकरण सेवा :